

**प्रश्न 3. वित्तीय जोखिम क्या है? इसका अभ्युदय कैसे होता है?**

**उत्तर—**वित्तीय योजना सक्षम न होना अथवा वित्त सम्बन्धी निर्णयों का पूरा न होना वित्तीय जोखिम कहलाते हैं। ये निम्न कारणों से उत्पन्न होते हैं—

(i) **वित्तीय योजना के कार्यान्वयन में कठिनाई (Problems in Execution of Financial Plans)**—कई बार वित्तीय योजना के अन्तर्गत नियोजित स्रोत से वित्त प्राप्त नहीं हो पाता, परिणामतः मँहेंगे स्रोत से वित्त प्राप्त करना पड़ता है, जिससे वित्तीय लागत बढ़ जाती है।

(ii) **अपरिवर्तनशील (Rigidness)**—एक बार वित्तीय योजना बन जाने के पश्चात् उसको परिवर्तित करने में अत्यंत कठिनाई होती है फलस्वरूप वित्तीय जोखिम एवं हानि का सामना करना पड़ता है।

(iii) **पूँजी बाजार में परिवर्तन (Changes in Capital Market)**—पूँजी बाजार में होने वाले आकस्मिक परिवर्तन भी वित्तीय जोखिम का कारण बनते हैं।

प्रश्न 4. 'चालू सम्पत्तियों' को परिभाषित कीजिए तथा उनके कोई चार उदाहरण दीजिए।

उत्तर—चालू सम्पत्तियाँ (Current Assets)—जो सम्पत्तियाँ रोकड़ के स्वरूप में तुरंत परिवर्तनीय हैं, उन्हें तरल सम्पत्तियाँ कहा जाता है, परन्तु इस परिवर्तन प्रक्रिया में लाभ की दर कम रह जाती है जैसे—रोकड़ (Cash in hand), देनदार (Debtor), कच्चा माल (Inventory), प्राप्त बिल (Bills Receivable) इत्यादि।

प्रश्न 5. वित्तीय प्रबन्धन तीन विस्तृत वित्तीय निर्णयों पर आधारित होता है, ये क्या हैं?

उत्तर—वित्त कार्य, वित्त प्रबन्ध द्वारा लिये जाने वाले तीन प्रमुख निर्णयों से सम्बन्धित होते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

(i) निवेश सम्बन्धी निर्णय (Investment Decisions)—निवेश सम्बन्धी निर्णयों का सम्बन्ध उन सम्पत्तियों के सुविचारित चयन से है जिसमें कम्पनी अपने कोषों का निवेश करना चाहती है। दीर्घ अवधि अथवा अल्प अवधि सम्पत्तियों में निवेश को कार्यशील पूँजी बजट एवं बाद वालों से जुड़े निर्णयों का कार्यशील पूँजी कहते हैं।

(ii) वित्तीयन सम्बन्धी निर्णय (Financing Decisions)—किन स्रोतों से कितना धन एकत्रित करना है, इस बात का निर्णय वित्तीयन सम्बन्धी निर्णय के अन्तर्गत किया जाता है। इस निर्णय के अन्तर्गत विभिन्न दीर्घकालीन वित्तीय स्रोत जैसे—अंश, ऋणपत्र इत्यादि के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त की जाती है।

(iii) लाभांश निर्णय (Dividend Decisions)—वित्तीय प्रबन्ध का तीसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह देखना है कि कर भार तथा ऋण भार से निपटने के बाद बचे हुए लाभ अंशधारियों में बाँटने हैं अथवा संचित लाभ के रूप में बचाकर रखने हैं। संचित कोष दीर्घकालीन वित्तीय स्रोतों का मुख्य एवं महत्वपूर्ण अंग है।

**प्रश्न 4. लाभांश निर्णय को प्रभावित करने वाले घटकों को समझाइए।**

**उत्तर—**लाभांश का निर्णय तत्वों के ध्यानपूर्वक विश्लेषण के पश्चात् लिया जाता है। एक दीर्घ अवधि लाभांश नीति को विकसित करने के लिए इन सभी तत्वों का विश्लेषण करना होगा—

(i) **कम्पनी की वित्तीय आवश्यकताएँ (Financial Requirements of Company)**—कम्पनी की वित्तीय आवश्यकताएँ इसकी विनियोजन आवश्यकताओं पर निर्भर करेंगी। यदि कम्पनी के पास कुछ परियोजनाएँ हैं जिनमें यह निवेश कर सकती है तो इसे कम्पनी अंशधारियों को कम लाभांश देगी तथा शेष लाभों को कम्पनी में विनिवेश करेगी। इस कम्पनी को कई लाभप्रद विनिवेश के अवसर मिलते हैं तथा भविष्य में विकास के लिए इन्हें दीर्घ अवधि कोषों की आवश्यकता होती है।

(ii) **लाभांश में स्थायित्व (Stability in Deividend)**—अधिकांश कम्पनियाँ स्थायी लाभांश नीति का पालन करती हैं। इस नीति का अंशों के बाजार मूल्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अंशधारी भी स्थायी लाभांश को अस्थायी की

(iii) पूँजी बाजार का ध्यान रखना (Position of Capital Market)—जब भी किसी कम्पनी को वित्त की आवश्यकता होती है तो वह पूँजी बाजार से अतिरिक्त समता पूँजी जुटा सकती है या फिर आय का संचय कर कम लाभांश दे सकती है। यदि कम्पनी का पूँजी बाजार में सरल प्रवेश है तो यह लाभांश की उदार नीति अपना सकती है।

(iv) अंशधारियों की प्राथमिकताएँ (Preferences of Shareholders)—अंशधारी कम्पनी के स्वामी होते हैं इसलिए कम्पनी के प्रबंधकों एवं निदेशकों को उनकी प्राथमिकताओं को महत्व देना चाहिए। यदि वह वर्तमान में आय चाहते हैं तो वह लाभांश को प्राथमिकता देंगे।

**प्रश्न 1. सुदृढ़ वित्तीय योजना की विशेषताएँ बताइए।**

**उत्तर—**सुदृढ़ वित्तीय योजना की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(i) **लोचशीलता (Flexibility)**—एक व्यवसाय की वित्तीय योजना में लोचशीलता का गुण होना अति आवश्यक है। लोचशीलता के गुण से ही व्यवसाय में अवसरों का लाभ उठाया जा सकता है।

(ii) **सरलता (Simplicity)**—व्यवसाय की वित्तीय योजना का सरल होना उसकी सफलता के प्रतिशत में वृद्धि करता है। वित्तीय योजना ऐसी होनी चाहिए जिसे सभी सम्बन्धित पक्षकार आसानी से समझ सकें।

**प्रश्न 2. वित्तीय नियोजन की सीमाएँ बताइए।**

**उत्तर—**वित्तीय नियोजन की कुछ कमियाँ अथवा सीमाएँ इस प्रकार हैं—

(i) **अविश्वसनीय पूर्वानुमान (Unrealistic Forecasting)**—वित्तीय नियोजन पूर्वानुमानों पर आधारित होता है क्योंकि भविष्य अनिश्चित होता है इसलिए पूर्वानुमान प्रायः सही नहीं हो पाते।

(ii) **परिवर्तन का विरोध (Resistance to Change)**—परिस्थितियों में परिवर्तन होने के कारण वित्तीय योजना में भी परिवर्तन करना जरूरी होता है परन्तु प्रबन्ध इसका विरोध करते हैं।